यूनिट III

व्यक्तित्व : संकल्पना, प्रकार व व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक, इसका मापन।

———————————————————

व्यक्तित्व अर्थ :– व्यक्ति के बाह्य गुणों/आचरण को व्यक्त करना।

PERSONALITY (लैटिन भाषा) - Persona/मुखौटा।

व्यक्तित्व की परिभाषाऐं :–

गिलफोर्ड–''व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है।''

बिग व हण्ट –''व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार प्रतिमान/मॉडल तथा उसकी विशेषताओं के योग को व्यक्त करते है।''

आल्पोर्ट :–''व्यक्तित्व, व्यक्ति के अंदर उन मनोशारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ उसकों एक अनूठा समायोजन स्थापित करते है।''

वुडवर्थ :–''व्यक्तित्व, व्यक्ति के व्यवहार की एक समग्र विशेषता है।''

- मनोविज्ञान/साइक्लोजी के अनुसार व्यक्तित्व

वशांनुक्रम X वातावरण =व्यक्तित्व

- व्यक्तित्व वंशानुक्रम व वातावरण दोनों का गुणनफल है।
- व्यक्तित्व एक बहु आयामी पक्ष है– शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक।
- व्यक्तित्व की विशेषताऐं:–

1. आत्मचेतना– मैं कैसा हूं? मेरे अंदर क्या गुण/दोष है?
2. गतिशीलता/गत्यात्मकता–समय के अनुसार बदलाव।
3. सामाजिकता – ''जो समाज से बाहर रहता है वह पशु तुल्य है।''–अरस्तु।
4. उत्तम समायोजन शक्ति।
5. दृढ इच्छाशक्ति।
6. विकास की निरंतरता।
7. ''व्यक्तित्व निरंतर विकास/निर्माण की प्रक्रिया है''–गैरिसन।

व्यक्तित्व के प्रकार

1. भारतीय वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार :–

1.सत्व/सतोगुणी व्यक्तित्व :–सत्व गुण हो, जो ज्ञानी, शांत, निर्मल, धार्मिक, क्रोध पर नियंत्रण रखने वाला।

2.तम/तमोगुणी व्यक्तित्व :– तम गुण हो, जो कामी, क्रोधी, आलसी, लडाई–झगडे वाले।

3.रज/रजोगुणी व्यक्तित्व :–रज गुण हो, वीर, साहसी, दबंग इत्यादि।

2. शारीरिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार :–

1.क्रेचमर/क्रेश्मर के अनुसार – 4 प्रकार है–

1.गोलाकाय(Pyknic type)– नाटे, छोटे, मोटै, मिलनसार, खाने–पीने वालें।

2.लम्बाकाय(Asthenic type)–अत्यधिक दुबले, पतले, काल्पनिक(दूसरों की निंदा करने वाले)।

3.सुडौलकाय(Athelic type)– हष्ट–पुष्ट/खिलाडीकार, साहसी, निर्भीक।

4.मिश्रितकाय(Dysplastic type)–सभी प्रकारों का मिश्रण जैसे– ग्रेट खली/विशालकाय।

2..शेल्डन के अनुसार –सिद्धांत दिया–मोनोटाईप–व्यक्तित्व के 3 प्रकार है:–

1.गोलाकृति/एण्डोमॉर्फी(Emdomorphic):– भोजन प्रेमी, आराम पंसद, गोल–मटोल, सामाजिक व हंसमुख।

2.आयाताकृति/मैसोमार्फी –रोमांचप्रिय, खिलाडी, जोशीले, उद्देश्य केन्द्रित।

3.लम्बाकृति/एक्टोमार्फी– शारीरिक रूप से कमजोर, एकांत प्रिय, जल्दी थकने वाले, शारीरिक श्रम में असमर्थ।

3.मूल्य दृष्टिकोण/समाजशास्त्र के आधार पर व्यक्तित्व के प्रकार :–

1.स्प्रैन्सर के अनुसार –**Book- Types of Man** में व्यक्तित्व के 6 प्रकार बताये है :–

1.सैद्धांतिक व्यक्तित्व – सिद्धांतवादी– लेखक, कवि, पत्रकार, दर्शनिक।

2.आर्थिक व्यक्तित्व – धनसंचय वाले –व्यापारी, दुकानदार, उद्योगपति।

3.सामाजिक व्यक्तित्व –सामाजिक कार्यों में व्यस्त– कार्यकर्ता, समाजसेवी।

4.राजनैतिक व्यक्तित्व –सत्ता एवं स्तर प्राप्त करने की लालसा वाले – नेता, मंत्री।

5.सौंदर्यात्मक/कलात्मक व्यक्तित्व–सौन्दर्य प्रेमी/कला प्रेमी–मूर्तिकार।

4.चरक संहिता के अनुसार –चरक संहिता आयुर्वेद का आधार ग्रन्थ है। इसमें तीन तत्वों

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

के आधार पर 3 प्रकार का व्यक्तित्व बताया है–

1.वात –आकाश व वायु की अंतक्रिया –चंचल एवं स्फूर्तिवान।

2.पित –वायु व अग्नि की अंतक्रिया – आंनन्द युक्त एवं सुस्त।

3.कफ–जल व पृथ्वी की अंतक्रिया – सुस्त एवं शांत।

5.हैप्पोक्रेटिज के अनुसार –हैप्पोक्रेटिज एक ग्रीक चिकित्साशास्त्री थे इन्होनें अपनी पुस्तक ''**Nature of Man**'' में चार प्रकार के द्रव के आधार पर 4 प्रकार के व्यक्तित्व बताये है–

1.रक्त/**Blood**–रक्त वर्णक – उत्साही, खुशमिजाज, सक्रिय।

2.कफ/**Phlegm**–श्लैष्मिक – आलस्य व ताम्य की अधिकता।

3.पीला पित्त/**Yellow Bile**– दोषशील–चिडचिडे एवं क्रोधित।

4.काला पित्त/**Black Bile** –विषादी – चिंताग्रस्त एवं निराशावादी।

6.मनोवैज्ञानिक/सामाजिक गुणों के आधार पर – युंग/जुंग, आईजेनिक, गिलफोर्ड ने किया।

- फ्रॉयड के शिष्य युंग/जुंग ने सामाजिक दृष्टिकोण से 3 प्रकार का व्यक्तित्व बताया है :–

  1.अंतर्मुखी/**Introvert**– संकोची, लज्जाशील, अल्पभाषी, एकांत प्रिय, आत्मकेन्द्रित, असामाजिक प्रकृति वाले।

  2.बर्हिमुखी/**Extrovert**–सामाजिक प्रकृति वाले, चिंता–मुक्त, साहसी, आशावादी, लोकप्रिय।

  3.उभयमुखी/**Ambivert**–जो दोनों प्रकार के गुण होते है।

नोट :– जुंग ने दो ही प्रकार – अंतर्मुखी व बर्हिमुखी बताये, तीसरा प्रकार उभयोमुखी बाद में प्रतिपादित किया गया।

- जुंग ने व्यक्तित्व का अधिक विस्तृत वर्गीकरण करने में 4 मनोवैज्ञानिक क्रियाओं का उपयोग किया – 1. संवेदना
  2. चिंतन
  3. भावना
  4. अंतर्दृष्टि

7.फ्रायड कें अनुसार –फ्रायड ने मनोलैंगिक/लिबीडों विकास के आधार पर 3 प्रकार बताये है :–

1. मुखीय अवस्था –जन्म से 8 माह तक, शिशु का आनन्द का केन्द्र मुख। जैसे– काटना, चूसना, निगलना।

- इस अवस्था में लैंगिक ऊर्जा/लिबीडो के स्थिरीकरण के परिणाम से दो प्रकार का व्यक्तित्व होता है–

  1. मुखीय निष्क्रीय प्रकार– आश्रित, आशावादी, चिंतनदृष्टि से अपरिपक्व।

  2. मुखीय निराश प्रकार– निराशावादी, झगडालू, संदेही।

2. गुदा प्रधान अवस्था –8 माह से 3 वर्ष तक, बालक के आनन्द का केन्द्र गुदा होता है। यानि इस अवस्था में बालक मल त्यागना या रोकना आदि क्रियायें सीखता हैं। इससे व्यक्ति में कंजूसी, जिद्दीपन, बाह्यता, सुव्यवस्था, अशांत आदि गुणों का विकास होता है।

3. लिंग प्रधान अवस्था –3 से 6 वर्ष तक, आनन्द का केन्द्र – जननेन्द्रियां/गुप्तांग

जैसेः लडका–ऑडीपस ग्रन्थि–माता से प्रेम।

लडकी–इलैक्ट्रा ग्रन्थि–पिता से प्रेम।

8.आधुनिक दृष्टिकोण के आधार पर –3 प्रकार है –

1. भावशील –अत्यधिक भावुक प्रकृति वाला।
2. कर्मशील –अत्यधिक कर्मठ प्रकृति वाला।
3. विचारशील –अत्यधिक वैचारिक प्रकृति वाला।

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक :–

1. वंशानुक्रम :– फ्रांसीसी गाल्टन ने प्रमाणित किया कि वंशानुक्रम के कारण ही व्यक्तियों के शारीरिक और मानसिक लक्षणों में भिन्नता दिखाई देती है।

वंशानुक्रम–माता–पिता से –शारीरिक–मानसिक–संवेगात्मक–व्यावसायिक शक्तियां।

2.जैविक कारक :– नलिका विहीन ग्रंथियां, अंतस्त्रावी ग्रन्थियां और शारीरिक रसायन।

3.शारीरिक रचना :– शरीर की लम्बाई, भार, नैत्रों और बालों का रंग इत्यादि।

4.मानसिक योग्यता :–व्यक्ति में जितनी अधिक मानसिक योग्यता होती है। उतना ही अधिक वह अपने व्यवहार को समाज के आदर्शों और प्रतिमनों के अनुकूल बनाने में सफल होता है।

5.विशिष्ट रूचि :–कला/संगीत में रूचि लोकप्रिय स्टार बनती है।

6.भौतिक वातावरण :–मरूस्थल, अरब, टूण्ड्रा प्रदेश आदि में रहने वाले लोगों की आदतें, शारीरिक बनावट, जीवनशैली, रंग इत्यादि।

7. सामाजिक वातावरण :– जन्म के समय मनुष्य कोई भी व्यवहार करना नही जानता है, जैसे–जैसे वह समाज के संपर्क में आता है।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

वैसे–वैसे उसमें भाषा, रहन–सहन, खाने–पीने की विधि इत्यादि का विकास होता है।

8. सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव :– संस्कृति की मान्यतायें, धर्म, रीति–रिवाज, मान्यताओं इत्यादि।

9.परिवार का प्रभाव –बालक के परिवार से प्रेम, सुरक्षा, स्वतंत्रता का वातावरण मिलता है तों उसमें साहस, स्वतंत्रता और आत्म–निर्भरता आदि गुणों का विकास होता है।

10. विद्यालय का प्रभाव –पाठ्यक्रम, अनुशासन, शिक्षक–छात्र संबंध, छात्र–छात्रा संबंध, खेलकूद इत्यादि।

11. अन्य कारक –1.बालक का पडोस, समूह
2. बालक के शारीरिक एवं मानसिक दोष, संवेगात्मक अंसतुलन।
3. मेला, सिनेमा, धार्मिक स्थान, आराधना–स्थल, सामाजिक स्थिति एवं कार्य।

———————————————

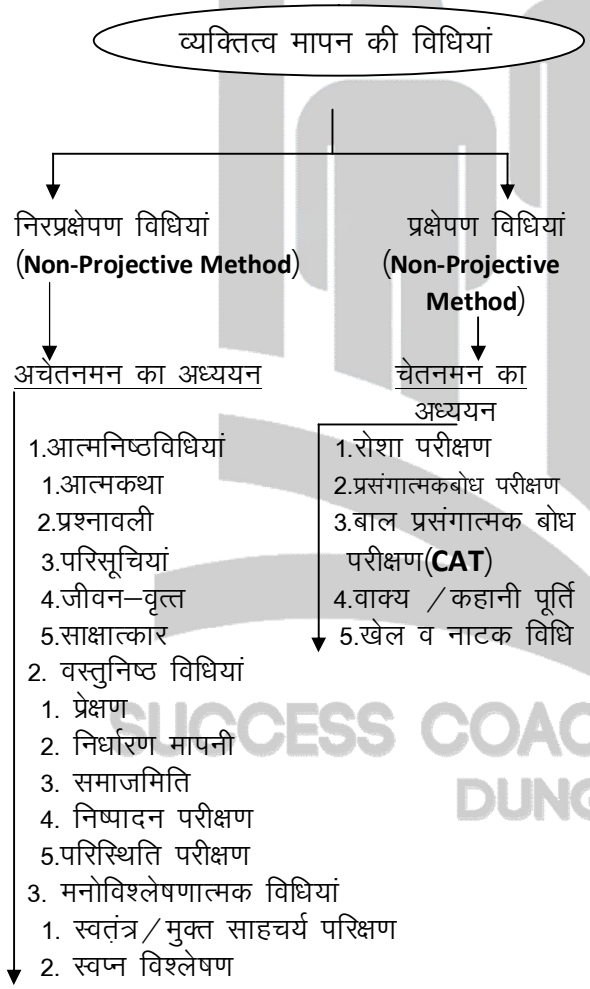

I.निरप्रेक्षण विधियां (**Non-Projective Method**) :–

1.आत्मनिष्ठ विधियां/ **Subjective Method** :–

1.आत्मकथा/Autobiography/Self-History - इस विधि में प्रयोज्य से स्वयं कहानी लिखवाकर उउसके व्यक्तित्व के गुणों का पता लगाया जाता है। ययह एक अवैज्ञानिक विधि होने के कारण वर्तमान में प्रप्रयोग नही होती है।

2.प्रश्नावली/Questionnaire - प्रश्नावली प्रश्नों की एक लम्बी श्रृखंला होती है, प्रथम प्रश्नावली वुडवर्थ (द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद मानसिक रोगी सैनिकों पर) ने बनाई थी। प्रश्नावली दो प्रकार की होती है :–

(अ)बंद प्रश्नावली –इसमें हॉ या नही में उत्तर दिया जाता है।

(ब)खुली प्रश्नावली –इसमें उत्तर स्वतंत्र रूप सें अपने शब्दों में लिखकर दिया जाता है। इसमें प्रश्नकर्ता एवं उत्तरदाता का आमने–सामने उपस्थित होना आवश्यक नही होता है।

(स)सचित्र प्रश्नावली (द)मिश्रित प्रश्नावली।

3.परिसूचियां/अनुसूचियां:– इसमें प्रश्नों की संख्या एवं समय निर्धारित होता है तथा दोनों का आमने सामने उपस्थित होना अनिवार्य होता है।

4.जीवनवृत्त/व्यक्ति इतिहास :–असामान्य एवं समस्यात्मक बालकों के व्यक्तित्व मापन के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है। (प्रतिपादक–टाईडमैन)

5.साक्षात्कार :– साक्षात्कार सामान्य वार्तालाप का ही एक रूप है। इसमें प्रश्नकर्ता एवं उत्तरदाता का आमने–सामनें होना आवश्यक होता है। इसमें प्रश्नों की संख्या एवं समय निर्धारित नही होती है।

2. वस्तुनिष्ठ विधियां /**Objective Method**:–

1.प्रेक्षण/निरीक्षण विधि/Observation Method :–इस विधि में प्रयोज्य के व्यवहार का विभिन्न परिस्थितियों में निरीक्षण करके उसके व्यक्तित्व का निष्कर्ष निकाला जाता है। इसमें विषयी को यह पता नही होता है कि उसके व्यवहार का निरीक्षण किया जा रहा है, इससे वह अपना स्वाभाविक व्यवहार प्रदर्शित करता है। (प्रतिपादक–जे0बी0 वाटसन)

2.निर्धारण मापनी/Rating Scale :–इस विधि में व्यक्तित्व के किसी *विशेष गुण अथवा व्यक्ति की कार्य कुशलता का मूल्यांकन* किया जाता है।

- इसमें गुणों को प्रदर्शित करने के एक सीमा होती है, जिससे मापनी की विश्वसनीयता में अंतर न आ सकें।
- प्रायः मापन प्रत्येक गुण को तीन या पांच श्रेणी में विभक्त कर उनके हां/नही में उत्तरों के आधार पर किया जाता है। इन श्रेणियों को 0 से

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

100 प्रतिशत अंकों से भी व्यक्त किया जा सकता है।

●उदाहरण –व्यक्तित्व के ईमानदार गुण या विशेषक को पंच बिंदुमापनी निर्धारण में व्यक्त करते है।

पंच बिंदु मापनी

1. सर्वदा सत्यवादी (उत्तम) 100%	2.प्रायः सत्यवादी (औसत से अधिक) 75%	3. कभी–2 सत्यवादी (औसत) 50%	4. बहुतकम सत्यवादी (औसत से कम) 25%	5. कभी नही सत्यवादी (निकृष्ट) 25%

- इस विधि द्वारा निष्कर्ष निकालने हेतु सांख्यकीय विधि (Statistical Method) का प्रयोग किया जाता है।

3. समाजमिति विधि / Sociogram Method :– जे0एल0 मेरेनों, 1934 में

- इस विधि के द्वारा समूह की संरचना का अध्ययन किया जाता है।

4. शारीरिक परीक्षण :– इस विधि द्वारा बाह्य व्यक्तित्व का मापन किया जाता है। इसमें विभिन्न यंत्रों के द्वारा शारीरिक क्रियाओं का मापन किया जाता है।

5. निष्पादन परीक्षण / Performance Test :– मापनकर्ता इस विधि में बालक को कुछ कार्य करने को देता है तथा उस कार्य को सम्पन्न करनें में अभिव्यक्त अनेक व्यक्तित्व विशेषकों / गुणों का पता लगता है।

- मई व हार्टशार्न ने ईमानदारी का गुण मापने हेतु इस विधि का प्रयोग किया।

6.परिस्थिति परीक्षण / Situation Test:–इसमें कृत्रिम परिस्थिति में बालक या व्यक्ति को रखकर उसके व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। ये कृत्रिम परिस्थितियां व्यक्ति के साहस, धैर्य, नेतृत्व, परिश्रम, ईमानदारी आदि गुणों के मूल्यांकन हेतु आयोजित की जाती है। किंतु इस बात का ध्यान रखना चाहिए की बालक / व्यक्ति को परिस्थिति की कृत्रिमता का पता न लगने पाए।

3. मनोविश्लेषणात्मक विधियां / **Psychonanlytical Method**:–

1.मुक्त साहचर्य परीक्षण / Free Association Test :– इस विधि का प्रवर्तन–फ्रायड ने किया तथा विकास–जुंग ने किया। इस विधि का प्रयोग मुख्यतः मानसिक रोगियों हेतु किया जाता है। मुक्त साहचर्य प्रक्रिया में विषयी / सब्जैक्ट को मनोवैज्ञानिक द्वारा सम्मोहित कर अर्द्धचेतन अवस्था में लाया जाता है फिर उससे प्रश्न पुछे जाते है, जिससें अंतर्मन में छिपी इच्छाएं व भावना प्रकट होती है। मनस्तपी बालकों के कुसमायोजन के कारणों के निदान व उपचार में यह विधि उपयोगी है।

2.स्वप्न विश्लेषण / Dream Analysis:––फ्रायड, 1900, सपनों का विश्लेषण करना।

3.प्रेक्षपण विधियां / Projective Method:– इन विधियों का सर्वप्रथम उल्लेख ''सिगमण्ड फ्रायड'' ने 1849 में किया।

(अ) साहचार्य परीक्षण :–घटनाओं के मध्य संबंध बताना।

1.*स्याही धब्बा परीक्षण / **I.B.T.-Ink Block Test*** :–प्रतिपादक –हरमन रोर्शाक, स्वीट्जरलैण्ड, 1921

कुल कार्ड (10) → (5) बिल्कुल काले(सफेद पर)
कुल कार्ड (10) → (5) अन्य रंग के (2 काले+3 अन्य)

2.*शब्द साहचर्य परीक्षण* :–इस विधि का निर्माण 1879 में फ्रांसिस गाल्टन द्वारा किया था। इस विधि में प्रयोज्य की आंतरिक मनोदशा का पता लगाने के लिए 50–100 उद्दीपक शब्दों से संबंधित विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इन विचारों का विश्लेषण करके व्यक्तित्व का पता लगाया जाता है।

जैसे – लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल।

(ब) संरचना परीक्षण :–दी गई परीस्थितियों के आधार पर कहानी आदि का निर्माण करना होता है–

1.*बाल–अंतर्बोध परीक्षण* / **Children Apperception Test -CAT** :–

CAT का प्रतिपादक –लियोपॉल्ड बेलक, 1948

इस विधि में चित्र श्रृंखला में जानवरों व बच्चों की विभिन्न स्थितियों के 10 चित्र होते है। परीक्षण की विधि TAT की तरह ही है।

2.*प्रांसगिक अंतर्बोध परीक्षण / थेमेटिक एप्रीसिपेशन टेस्ट* :–

TAT का प्रतिपादक –मुर्रे व मॉर्गन, 1935

कार्डों की संख्या – 30 + 1 (सादा –सृजनात्मकता हेतु / पंसद का चित्र बनवाना)

- 10 पुरूष हेतु
- 10 महिला हेतु
- 10 दोंनों से संबंधित

- कार्ड देखकर कहानी लिखना, कहानी हेतु 5 मिनिट का समय निर्धारित, कहानी का विश्लेषण।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

- 14 वर्ष से अधिक आयु के बालकों के लिए उपयोंगी।

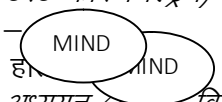

3-**RAT** *(राबर्ट एप्रीसियेशन टेस्ट फॉर चिल्ड्रन)*:– राबर्ट ने कार्ड्स की संख्या – कार्ड्स पर बालकों के चित्र हो

4.*रॉजन विग चित्र कुण्ठा अध्ययन/ विग पीक्चर फ्रस्टेशन स्टडी* :– कार्ड की संख्या 24

3. वाक्य पूर्ति परीक्षण - S.C.T. :-

Sentence Completion Test :-

प्रतिपादक – पाईन एवं टैण्डलर, 1930 में।

4.खेल व नाटक विधि/प्ले एण्ड ड्रामा मैथ्ड :–इस विधि में पूर्व नियोजित खेल व नाटकों में स्वतंत्रतापूर्वक भाग लेने हेतू बालकों को कहा जाता है। खेल व नाटक के पात्रों की भूमिका अभिनीत करते समय बालकों के व्यक्तित्व संबंधी गुण प्रकट होते हे।

- नाटक विधि का प्रयोग मोरेनो ने मनोरोगियों के मनस्ताप के निदान हेतु प्रयुक्त किया था।

5.चयन एवं क्रम परीक्षण :– इसमें फोटो दिखायी जाती है और पसंद अथवा नापसंद को पूछा जाता है।

6.अभिव्यक्ति परीक्षा/एक्सप्रेसिव टेस्ट :– इसमें बालकों को ड्रांईग करने के लिए कहा जाता है। इसमें ड्रांईग दो प्रकार की बनाई जाती है :–

1. DAP - DRAW A PERSON
2. HTP - HOUSE TREE PERSON

व्यक्तित्व के सिद्धांत

1. मनोविश्लेषण सिद्धांत :–सिगमण्ड फ्रायड, वियना।

- फ्रायड पहला व्यक्ति था, जिसने सर्वप्रथम बाल्यावस्था के अनुभवों को वयस्क व्यवहार और चेतन्यता का आधार बताया।
- फ्रायड ने इस सिद्धांत को दो भागों में बांटा –

  1.*स्थलाकृतिक सरंचना/*Toporaphical Structure :– फ्रायड ने मन के तीन स्तरों का वर्णन किया –

  अ. चेतन मन/Conscious :– इसका संबंध वर्तमान तथा वास्तविकता से होता है। यह हमारे मन का 1/10 वां भाग है।

ब. अर्द्धचेतन मन/ Sub conscious :– चेतन व अचेतन मन के बीच की स्थिति

स. अचेतन मन/ Un Conscious :– 9/10 वां भाग होता है, इसका संबंध स्वप्न अवस्था व दमित इच्छाओं स होता है।

2.*संरचनात्मक या गत्यात्मक मॉडल/* **Structural/Dynamic Modal** :– फ्रायड ने मानव व्यक्तित्व के तीन भाग बताये –

अ. इंदम्/उपाहं/ ID:– मूल प्रवृतियों/जन्मजात प्रकृति का भंडार, है और यह सुख/आंनन्द क`नियम से संचालित है। यह पूर्णतः अचेतन मन होता है। यदि एक व्यक्ति की शारीरिक इच्छायें इतनी प्रबल हो की उसकी मानसिक शक्तियों के द्वारा पूर्ण नियंत्रित नही हो पा रही हो तो इस विशिष्ट मनोशारीरिक स्थिति को **ID** कहते है। इस पशु प्रकृति का प्रतीक मानते है।

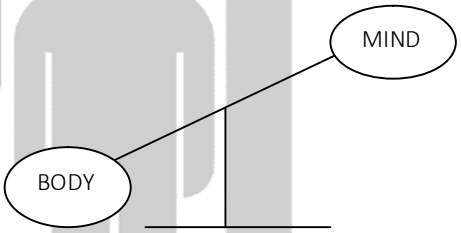

ब. अहम्/ EGO:– *व्यक्तित्व* का *कार्यपालक* होता है।यह वास्तविकता के नियम द्वारा संचालित होता है। जब एक व्यक्ति की शारीरिक इच्छाओं और मानसिक शक्ति के मध्य संतुलन की स्थिति हो तो इस विशिष्ट शारीरिक शक्ति को ईगों/अहम् कहते है। ऐसे व्यक्ति मानवीय प्रकृति के होते हे। ईगों का उदाहरण :– शादी।

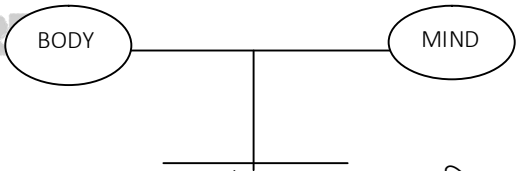

स. परा–अहम्/ Super Ego:– व्यक्तित्व का नैतिक कमाण्डर होता है। यह नैतिकता के नियम द्वारा संचालित होता है। यह पूर्णतः चेतन मन होता है। जब व्यक्ति के शारीरिक इच्छायें उसकी मानसिक शक्तियों के द्वारा पूर्णत नियंत्रण

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGAR

मे हो तो इस सूपर–ईगों कहते है। यह प्रवृति वृद्धावस्था में अधिक होती है।यह देवत्व का प्रतीक है।

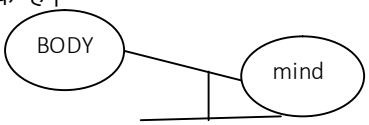

- इदम्/ID ओर परा–अहम्/Super Ego के बीच संघर्ष होता रहता है लेकिन अहम्/Ego के ज्यादा दृढ़ होने पर तथा सक्रिय होने पर यह संघर्ष जल्द ही समाप्त हो जाता है तथा व्यक्ति समायोजित होता है। इसके विपरीत यदि अहम्/ईगों कमजोर होता है तो ID व SUPER EGO का संघर्ष समाप्त नही हो पाता है, जिससे व्यक्ति कुसमायोजित हो जाता है और उसका व्यक्तित्व भंग हो जाता है। इसप्रकार व्यक्ति का व्यक्तित्व इन तीन घटकों की अंतक्रिया और समायोजन का परिणाम है।

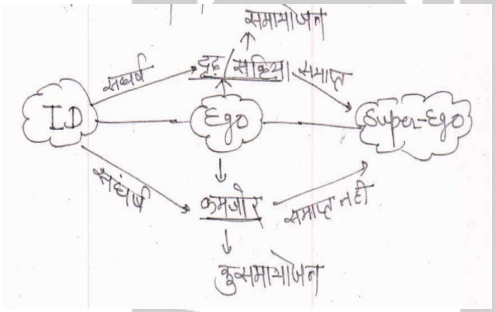

2.<u>शीलगुण सिद्धांत :–</u> इस सिद्धांत को ''विशेषक सिद्धांत'' भी कहते है। इस सिद्धांतानुसार व्यक्तित्व का निर्माण अनेक प्रकार के शील गुणों के कारण होता है।
जैसे – ईमानदारी, सत्यवादिता, कर्तव्यनिष्ठा, सहयोग आदि।

- शीलगुण सिद्धांत पर जी0डब्ल्यू आलपोर्ट और आरबी कैटल द्वारा विशेष रूप से कार्य किया गया है।
- आलपोर्ट शीलगुणों को दो भागों में वर्गीकृत करता है :–

1.*सामान्य शीलगुण :*–यह सभी व्यक्तियों में पाये जाते है। जैसे–दया, सहानूभूति इत्यादि।
2.*व्यक्तित्व शीलगुण* :– यह शील गुण बहूत कम लोगों में पाये जाते है। जैसे – मेहनती, स्फूर्त, निष्कपट इत्यादि।

- कैटल ने 16P.F.(प्राथमिक शीलगुण) बताये। इन शीलगुणों में धनात्मक चरित्र, व्यवहार कुशलता, संवेगात्मक स्थिरता, संवेदनशीलता आदि प्रमुख है। इन्होनें व्यक्तित्व को 16 कारक माना है। इसका प्रयोग मात्र व्यस्कों पर होता है।

———————————————————

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR